(कविता)
मेरे सपने

काश मैं पक्षी होती
बिना रोक टोक चली जाती
यूं बदलो के संग
स्वतंत्र नभ का आनंद उठाती।

काश मै हवा होती
जहां चाहे बह जाती
किसी निर्धन के घरों को
यूं ही मै शीतल कर जाती।

काश मैं बादल होती
जहां चाहे बरस जाती
किसी निर्जर वन को मैं
श्रृंगार से मैं यू सजाती।

काश मै फूल होती
बगो की मै शोभा बढ़ती
मातृभूमि को सेवा को जाए
कर्मवीर के पथ पर मै बिछ जाऊ।

संध्या कुमारी
भूगोल विभाग